एम.ए. जैनोलॉजी (पूर्वार्द्ध)
प्रथम पत्र : जैन इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं कला

नोट– निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Answer any four questions of the following.

1. प्राग्–ऐतिहासिक काल की सांस्कृतिक विभिन्नताओं को बताते हुए श्रमणों के उद्भव एवं प्रभाव को ठोस आधारों पर सिद्ध करें।

State the difference between the cultures of pre-historic age, explain the origination and Influence of *Sramanas* based on adequate principles.

2. जैन संस्कृति के आधारभूत तत्त्वों का विवेचन करें।

Explain the fundamental elements of Jain Culture.

3. जैन तीर्थस्थलों का संक्षिप्त परिचय दीजिए ।

Give a short introduction of holy places of Jain Pilgrims.

4. अरिष्टनेमि की ऐतिहासिकता सिद्ध कीजिए।

Prove the histriosity of Aristanemi.

5. भारतीय वास्तुकला में जैन मंदिरों के शैलीगत विकासक्रम पर प्रकाश डालें।

Throw light on the pattern development of Jain Temples in Indian Vastukala.

6. जैन चित्रकला किन–किन रूपों में प्राप्त होती है विस्तार से लिखें।

Write in detail what kinds of paintings are found in Jaina art?

7. जैन पौराणिक साहित्यों पर प्रकाश डालें।

Throw light on the Jain mythological literature.

8. दिगम्बर जैन आगमों पर प्रकाश डालें।

Highlight the Digambara Jain Canonical literature.

9. आचार्य कुन्दकुन्द व उमास्वाति के बारे में लिखें।

Write about *Acarya Kundakunda* and *Acarya Umasvati*.

10. विदेशों में जैन धर्म के बारे में लिखें।

Write about Jain religion in foreign countries.

11. चार प्रकार के पूजा के सम्बन्ध में एवं अष्ट द्रव्यों के बारे में लिखें।

Write about four types of worship and eight types of stuff in detail.

12. ग्रन्थ के विवरणानुसार काव्यों के प्रकारों का एक सारणी तैयार करें।

Make a chart of the different types of poeties according to the description of the text.

13. काव्यों के प्रकारों का संक्षिप्त परिचय दीजिये।

Give a short introduction to the types of poetries.

14. भगवान महावीर के ग्यारह गणधरों का विस्तृत विवरण दीजिए ।

Give a detail account of the eleven ganadharas of Lord Mahavira.

एम.ए. जैनोलॉजी (पूर्वार्द्ध)
द्वितीय पत्र– जैन तत्त्व मीमांसा एवं आचार मीमांसा

नोट– निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Answer any four questions of the following.

1. जैन दर्शन में द्रव्य विचार Substance in Jain philosophy
2. जीव की परिभाषा एवं प्रकार Definition and types of soul
3. जैन धर्म में धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय का स्वरूप एवं महत्व
   Nature and importance of medium of motion and rest
4. श्वेताम्बर एवं दिगम्बर सम्प्रदाय Swetamber and Digambar Sects
5. जैन परम्परा में काल का स्वरूप Nature of Time in Jain Tradition
6. जैन आचार मीमांसा की प्रमुख विशेषताएं The Significant features of Jain Ethics
7. जैन संघ व्यवस्था Jain Sangh Vyavastha
8. प्रेक्षाध्यान के आगमिक स्रोत के आधार पर एक निबन्ध लिखें।
   Write an essay on the Canonical sources of Prekshadhyan.
9. लेश्या को परिभाशित करते हुए उसके वर्गीकरण पर प्रकाश डालें।
   Define Lesya and explain its classification.
10. आवश्यक (षडावश्यक) Six Essentials
11. परीषह Hardships
12. जीव की परिभाषा एवं प्रकार Defination and kind of soul
13. आकाशास्तिकाय Theory of space
14. पुद्गलास्तिकाय Physical substance
15. श्रावकाचार House holders vratas
16. महाव्रत Mahavrats
17. नवतत्त्व Nine Tattvas

एम.ए. जैनोलॉजी (पूर्वार्द्ध)
तृतीय पत्र – ध्यानयोग एवं कर्ममीमांसा

नोट– निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Answer any four questions of the following.

1. क्रिया योग को परिभाषित करते हुए क्रिया योग के अंग पर प्रकाश डालें।
Defining Kriya Yoga, throw light on it's facets.
2. पॉच समवाय पर निबन्ध लिखिये।
Write an essay on five Samavaya (factors)
3. कर्मों की कितनी अवस्थाएं हैं?
Write the states of Karma in Jainism.
4. भारतीय दर्शन में कर्म सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए?
Explain the Karmic theory in Indian philosophy ?
5. वैज्ञानिक दृष्टि से कर्म सिद्धान्त का क्या महत्त्व है?
What is the importance of Karmic theory by scientific point of view ?
6. जैन योग पर विस्तृत निबन्ध लिखिये?
Write an essay on Jain Yoga in brief.
7. ध्यान का स्वरूप एवं उसके प्रकारों को स्पष्ट कीजिए?
Explain the defination of meditation and its division.
8. अनुप्रेक्षा से आप क्या समझते हैं, और इसके भेद कितने है, लिखिए?
What do you mean by contemlation and also write how many devisions are of its.
9. जैन कर्मवाद पर प्रकाश डालिए। Throw light on Jain Karmvad.
10. अष्टांग योग की विवेचना कीजिए। Explain the Astang Yoga.
11. बौद्ध समाधि पर प्रकाश डालिए। Throw Light on Bauddha Samadhi.
12. प्रेक्षाध्यान पर एक निबन्ध लिखिए। Write on essay on Preksha Meditation.
13. बुद्ध के अष्टांग मार्ग का वर्णन कीजिए। Describe the Astang Marg of Gautam Buddha.

एम.ए. जैनोलॉजी (पूर्वार्द्ध)

चतुर्थ पत्र : जैन ज्ञानमीमांसा एवं जैन न्याय

नोट– निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Answer any four questions of the following.

1. केवलज्ञान पर विस्तार से लिखें।
Write in detail about omniscience.
2. इन्द्रियों को परिभाषित करते हुए उसके भेद–प्रभेदों को समझाइये।
Define indriya and explain its types and subtypes.
3. जैन न्याय के विकास पर प्रकाश डालें।
Highlight the development of Jain Logic.
4. अनुमान प्रमाण को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
Explain the Valid source of knowledge of inference.
5. आचार्य हेमचन्द्र द्वारा 'प्रमाणमीमांसा' में जो प्रमाणलक्षण दिया गया है, उसमें उनकी मौलिकता और समन्वयात्मक दृष्टिकोण झलकता है– इस उक्ति का समर्थन करें ।
The definition of *Pramana* propounded by Acharya Hemchandra in *Pramana Mimansa*, shows his original thinking as well as his synthetic approach. Justify it.
6. प्रत्यक्ष ज्ञान पर एक लघु निबन्ध लिखें ।
Write a short essay on Pratyaksha Gnana (non-perceptual knowledge).
7.ज्ञानेन्द्रियों के स्वरूप, कार्य, क्षमता आदि का निरूपण करें और इसके दो भेदों – द्रव्येन्द्रिय और भावेन्द्रिय के स्वरूप को स्पष्ट करें।
Describe the nature, role & capacity etc. of sense-organs and elucidate the nature of its two kinds--Dravyendriya (sense-qua-substance) and Bhavendriya (function senses).
8. व्यन्जनावग्रह को प्रतिबोधक दृष्टान्त के माध्यम से समझाएं।
Explain Vyanjanavagrah (Contact-awareness) with the help of Pratibodhak example.
9.अनुयोगद्वार सूत्र व तत्त्वार्थसूत्र में की गई प्रमाण–चर्चा में न्याय सम्बन्धी विचारधारा का जो विकास प्रतिबिम्बित हुआ है, उसका मूल्यांकन करें।
Evaluate the development of Jain Logical thought reflected in the discussion made in Anuyogdwara and Tattvartha Sutra.
10. अश्रुतनिश्रित मतिज्ञान और इसके चार भेदों–जिन्हें चार बुद्धियों के रूप में जाना जाता है– उसे स्पष्ट रूप से समझाएं।
Explain vividly Ashruta-nishrita (perceptual cognition not backed by scriptural learning) matijnana and its four kinds known as four Buddhis.
11. जैन न्याय के विकास में आचार्य हेमचन्द्र के योगदान का मूल्यांकन करें ।
Evaluate the contribution of Acharya Hemchandra to the development of Jain Logic thought.
12. परोक्ष ज्ञान पर एक लघु निबन्ध लिखें ।
Write a short essay on Paroksha Jnana (non-perceptual knowledge).
13. सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष की अवधारणा को व्याख्यायित करें।
Explain the concept of Samvyavaharika Pratyaksha (empirical).
14. मनः पर्यवज्ञान को स्पश्ट करते हुए ऋजुमति एवं विपुलमति मनः पर्यवज्ञान को व्याख्यायित करें।
Introducing mind reading knowledge define Riju Mati (Direct mind reading) and Vipulmati (Extensive mind reading) mind reading knowledge.